Vol. 03, Issue 03, December 2021
ISSN (Online) No. 2 5 8 2 – 0 4 6 X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

कृषकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति चौधरी चरण सिंह का दृष्टिकोण

डॉ. सुरेश चन्द
एसोसिएट प्रोफेसर- इतिहास विभाग
के.जी.के.(पी. जी.) कॉलेज, मुरादाबाद (उ. प्र.)
Email : sureshchand5265@gmail.com

डॉ. ममता
पूर्व शोधार्थिनी - इतिहास विभाग,
के.जी. के. कॉलेज, मुरादाबाद (उ. प्र.)

Abstract

भारत के पांचवें प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की राजनीतिक यात्रा उनके कृषकों के नेता के तौर पर उभरने पर आधारित थी। आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचार में चौधरी साहब का भी विशेष योगदान रहा। उनकी आर्य समाज एवं जाट कृषक समाज की पृष्ठभूमि ने उनके व्यक्तित्व पर छाप तो छोड़ी परंतु धर्मांधता, अंधविश्वास एवं जातिवाद जैसी संकीर्णताओं से वह कम प्रभावित दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने गांधीवाद, किसान सुधार, जमींदारी उन्मूलन, भारतीय अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर पुस्तकें, लेख एवं भाषण देकर अपने एक प्रबल बुद्धिजीवी होने का प्रमाण दिया। ज़मीनी सामाजिक स्तर से लेकर उच्चतम राजनीतिक परिवेश पर उन्होंने अपने विचार प्रकट किए। जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले भ्रष्टाचार के कारणों पर भी चौधरी साहब ने रोशनी डाली है। उनके विचारों की आज के समय के लिए प्रासंगिकता उनके धर्म परिवर्तन के विवादास्पद प्रश्न पर चिंतन से भी जाहिर होती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू से उनकी किसी विषय पर सहमति थी तो कुछ विषयों पर मतभेद। इस शोधपत्र में इन्हीं सब विषयों की चर्चा संक्षेप में की गई है।

Key Words: चौधरी चरण सिंह, कृषक सुधार, आर्य समाज, धर्म परिवर्तन, सांप्रदायिकता, अंतर्जातीय विवाह

विचारधारा की पृष्भूमि में आर्यसमाज

कृषकों की सामाजिक समस्याओं के प्रति चौ चरण सिंह के दृष्टिकोण मे मूलरूप से उनके सामाजिक विचार ही समाहित हैं। चौधरी साहब के जीवन पर महर्षि दयानंद सरस्वती का गहरा प्रभाव था। अजमेर में महर्षि दयानंद अर्द्धशताब्दि समारोह के अवसर पर चौधरी चरण सिंह ने एक लेख लिखा था जिसका शीर्षक 'हमारा दायित्व क्या है '? इसमें उन्होंने आर्यपथ के अनुयायियों का आह्वान किया था कि नवीन स्फूर्ति और प्रेरणा के साथ हमे अपने महान गुरु महर्षि दयानंद सरस्वती के उन कार्यों को पूरा करने में जुट जाना चाहिए जो उनके द्वारा अधूरे छूट गए थे।[1] चौधरी चरण सिंह के विचारों में कुछ विरोधाभास अथवा अंतर्विरोध था परन्तु वे हिन्दू एकता के विचारों से आकर्षित हुए थे। उन्होंने परम्परागत जाति व्यवस्था जिसके कारण कारण कुछ लोगों को निम्न समझा जाता था पूर्णरूप से अस्वीकार किया, वे ब्रह्मवादी अवधारणाओं के भी खिलाफ थे।[2] चौधरी चरण सिंह के सामाजिक विचारों में उनके जातिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा देशकाल के परिवेश की स्पष्ट छाप मिलती है। आर्य समाज के प्रभाव से वे जहां एक ओर प्रगतिवादी नजर आते हैं वहीं दूसरी ओर कुछ विषयों पर

उनके रूढ़िगत एवं ग्रामीण परिवेश से उपजे विचार उनके वक्तव्यों तथा क्रियाओं पर हावी हो जाते हैं। एक तरफ गांधीवादी विचार जातिवाद, अस्पृश्यता निवारण जहां उन्हें साम्प्रदायिक सदभाव की दिशा में पहल करने के लिए प्रेरित करते हैं तो वहीं दूसरी ओर अपनी जाति विशेष एवं कृषक वर्ग के प्रति विशेष आग्रह उन्हे चाहे अनचाहे उनके अवचेतन से निकालकर किसी न किसी रूप में प्रकट हो जाता है। इसलिए यह भी माना जाता है कि चौधरी चरण सिंह के सामाजिक विचारों में विरोधाभास तथा अस्पष्टता देखने को मिलती है।

19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में विशेषकर मेरठ एवं आसपास के क्षेत्रों में आर्य समाज बहुत लोकप्रिय हुआ, जिसने मूर्तिपूजा, धार्मिक क्रियाकलापों, छुआछूत तथा पाखंड का विरोध किया तथा स्थानीय एवं स्वदेशी भावनाएं जागृत करने का कार्य किया।आर्यसमाज ने ही अतीत को पुनर्जागृत किया और भारत को 20वीं शताब्दी में ले जाने का कार्य किया।[3]

चौधरी चरण सिंह को भी आर्यसमाजी विचारधारा विरासत में मिली इसलिए उन्होंने स्वयं कहा कि "राजनीति में फंसा होने के कारण भी मैं आर्यसमाजी हूँ, विद्यार्थी जीवन से ही मैंने आर्यसमाज का कार्य करना शुरू कर दिया था परन्तु इच्छा होते हुए भी मैं आर्य समाज की उतनी सेवा नहीं कर सका जितनी करनी चाहिए थी इसका मुझे खेद है"।[4] वे राजनीति में सक्रियता के बावजूद भी समय निकालकर आर्यसमाज के समारोहों मे भाग लेते रहे हैं। 1983 मे भी चौधरी साहब ने महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्म शताब्दी वर्ष में महर्षि का जीवन दर्शन नामक लेख लिखा। इस प्रकार आर्य समाज एवं स्वामी दयानंद सरस्वती का उन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सनातन संस्कृति उनका धर्माचार था तथा प्रतीक पूजा एवं आडम्बर से वे दूर थे।[5] विरोधाभास तब दिखता है जब अपने एक साक्षात्कार में वे कहते हैं कि उनके ज्योतिषी एवं गुरु ने उन्हें यह आश्वासन दे रखा है कि एक दिन वे प्रधानमंत्री अवश्य बनेंगे।[6] परन्तु फिर भी यह माना जाता है कि चौधरी साहब प्रगतिवादी थे यदि वे किसी ज्योतिषी के सम्पर्क में आए तो उत्सुकतावश न कि किसी अंधविश्वास के कारण।

जातिव्यवस्था एवं अस्पृश्यता के विरुद्ध

चौधरी चरण सिंह हिन्दू समाज की जाति व्यवस्था के कट्टर आलोचक थे क्योंकि वे इसे एक सामाजिक बुराई मानते थे और सर्वधर्म समभाव के पक्षधर थे। उन्होंने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि "जाति प्रथा के कारण ही भारत के विभिन्न धार्मिक समूह सामाजिक और राजनीतिक रूप से एक दूसरे के समीप नहीं आ सके तथा एक सुदृढ़ समाज का निर्माण नहीं हो सका।[7] तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु जी को 22 मई, 1954 को एक पत्र में चौधरी साहब ने जाति प्रथा का वर्णन करते हुए लिखा था- "इसने न केवल हमारे सार्वजनिक जीवन पर उच्चतम स्तर तक प्रहार किया है बल्कि सेवाओं को भी प्रभावित किया है, इससे विभेद और अन्याय बढ़ता है, विकृतियां बढ़ती है। आदमी के दिल और दिमाग में संकीर्णता आ जाती है तथा दोषारोपण और प्रतिदोषारोपण का दुश्चक्र पैदा हो जाता है और समाज में अविश्वास तथा संदेह की भावना भर जाती है"।[8]

उनका विचार था कि जाति प्रथा प्रत्येक हिन्दू मस्तिष्क में बचपन से ही ऊँच-नीच के बीज बो देती है तथा यह प्रथा किसी को लाभ तो किसी को हानि पहुंचाती है। जाति प्रथा श्रम की संकल्पना के विरूद्ध भी कार्य करती है जिससे शारिरिक श्रम को अधम समझा जाता है। जो व्यक्ति काम नहीं करते अथवा कम काम करतें हैं वे सामाजिक स्तर पर ऊँचा स्थान प्राप्त करते हैं और जो व्यक्ति अधिक काम करते हैं वे सामाजिक स्तर पर निचला स्थान प्राप्त करतें हैं।[9]

उनके विचार मे जाति प्रथा ही हमारी दासता का मूल कारण रही, जाति प्रथा से आक्रान्त भारतीय समाज राजनीतिक एकता के अभाव में विदेशी आक्रमणकारियों का मुकाबला एकजुट होकर नहीं कर सके।[10] जातिवादी तत्वों ने हमारे समाज को सर्वाधिक क्षति पहुंचाई है, इसलिए भारतीय राजनीति के लिए यह अच्छा होगा कि जितना जल्दी हो सके जातिवाद को निर्मूल नष्ट कर इसके कीटाणुओं को फैलने से रोके। उन्होंने अपने सिद्धांतों को अपने जीवन में भी उतारा तथा स्वयं को नौकरी की आवश्यकता होते हुए भी गुलावठी तथा बड़ौत में शिक्षक की नौकरी इसलिए स्वीकार नहीं की क्योंकि इन संस्थाओं के नाम के साथ एक जाति विशेष का नाम जुड़ा था।[11] 1967 में जब वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तो शिक्षण संस्थाओं के नाम के आगे से जातिसूचक शब्दों को हटवाया तथा अनुदान नियमों में उससे सम्बंधित संशोधन भी किए।[12]

केंद्र में गृहमंत्री बनने पर उन्होंने मण्डल आयोग का गठन कराया परन्तु अपनी जाति को मण्डल आयोग की सिफारिशों में शामिल करने की स्वयं सिफारिश नही की। कुछ लोगों द्वारा अपने प्रति जातिवादी होने के आरोपों का प्रतिउत्तर उन्होंने 'हू इज ए कास्टस्ट' नामक पुस्तक में देने का प्रयास किया है तथा लिखा है कि नेहरु जैसे व्यक्ति भी अपनी जाति के सम्मेलनों में शामिल हुए, लेकिन वे किसी भी जाति सम्मेलन में शरीक नहीं हुए, न ही किसी ऐसी संस्था के सदस्य बने जो जाति आधारित हो।[13]

चौधरी चरण सिंह प्रारंभ से ही अस्पृश्यता के विरोधी थे। छात्रवास में रहते हुए भी तथा बाद में भी आजीवन उनका रसोइया दलित जाति का था यद्यपि कुछ लोग उन्हें दलित विरोधी कहते हैं परन्तु वास्तव मे ऐसा नहीं था।[14] ज़मींदारी उन्मूलन के समय चौधरी चरण सिंह ने उन सभी दलित शिकमीदारों को जमीन का सीरदार बना दिया था जिनके नाम शीकमीदर के खाने में दर्ज़ थे। इसी कानून से सभी दलित शिकमीदार ज़मीनो के मालिक बन गए थे।[15] उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनने पर उन्होंने ही पहली बार किसी दलित को लोकसेवा आयोग का सदस्य नियुक्त किया।[16] इसलिए डॉ राम मनोहर लोहिया के बाद यदि कोई राजनेता पिछड़ो को राजनैतिक अधिकार देने वाला था तो वह चौधरी चरण सिंह ही थे।[17]

धर्मपरिवर्तन एवं साम्प्रदायिकता पर विचार

चौधरी चरण सिंह के अनुसार देश में धर्मपरिवर्तन के लिए भी जातिप्रथा ही उत्तरदायी रही। जाति प्रथा ने ही समाज में ऊंच नीच के भाव पैदा कर दिये थे जिसके फलस्वरूप लाखों हिन्दुओ ने अपना धर्म परिवर्तन किया। इस परिस्थिति की विडम्बना इस तथ्य में निहित है कि जिन मनुष्यों को अपने जन्म के कारण अपने ही धर्म के लोगों से तिरस्कृत होना पड़ा, उन्हें उनके नए सहधर्मियों ने बराबर की मान्यता उसी समय प्रदान की जैसे ही उन्होंने अपने पूर्वजों के धर्म का परित्याग किया।[18] देश में ईसाई मिशनरियों की बढ़ती हुई गतिविधियों के बारे मे चौधरी साहब ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि पूर्वी राज्यों में इनकी गतिविधियों पर कोई रोक नहीं लगाई गई तो वह दिन दूर नहीं जब वहाँ से भी अलगाववादी आवाजें सुनाई देने लगेंगी, आज जब हम मणिपुर, नागालैंड आदि पूर्वी राज्यों के हालात देखते हैं तो उनकी चेतावनी बिल्कुल उचित प्रतीत होती है।

9 अगस्त, 1966 को चौधरी चरण सिंह ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को एक पत्र लिखा जिसमें तथ्यों एवं आंकड़ों के माध्यम से पंजाब में जाटों की धर्म परिवर्तन की समस्या को उजागर किया था।[19] उन्होंने लिखा था कि "पंजाब से सम्बंधित 1931 की जनसंख्या के आंकड़ों के सन्दर्भ से यह विदित होता है कि 1981 में इस प्रान्त में हिन्दुओ की जनसंख्या 43.8 प्रतिशत से घटकर 30 प्रतिशत हो गई है जबकि सिक्खों की जनसंख्या 8.2% से बढ़कर 14.3 प्रतिशत हो गई है और मुसलमानों की संख्या 40.6 % से बढ़कर 52.4 % हो गई है।[20] इसका कारण यह था कि यहाँ के जाट और सैनी कृषक जातियों ने अपने कुछ सहधर्मियों द्वारा हिकारत की दृष्टि से देखे जाने के कारण मध्य पंजाब में सिख एवं पश्चिमी पंजाब में इस्लाम धर्म को अपनाया।[21] धर्म परिवर्तन की उनकी यह पीड़ा उनके हिन्दू विचारों की एकता को परिलक्षित करती है।

चौधरी चरण सिंह ने जातिवाद को जड़ से खत्म करने के लिए अंतर्जातीय विवाह का सुझाव दिया तथा इस सम्बंध में 22 मई, 1954 को नेहरू जी को एक लम्बा पत्र लिखा- कि सरकारी नौकरियों और विधानसभाओ में अंतर्जातीय विवाहों को एक अनिवार्य योग्यता के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इस बारे में उन्होंने नेहरू जी को संवैधानिक व्यवस्था करने अर्थात संविधान संशोधन करने का सुझाव दिया।[22] नेहरू जी ने अंतर्जातीय विवाह के महत्व को स्वीकारते हुए भी उनके इस सुझाव को व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आधारभूत सिद्धान्त का विरोधी मानते हुए ठुकरा दिया परन्तु इसका अनुसरण उन्होंने अपने पुत्र एवं दो पुत्रियों का अंतर्जातीय विवाह करके अपने व्यक्तिगत जीवन में किया।[23] एक बार एक वरिष्ठ पत्रकार जो उनके चुनावी दौरे में उनके साथ था इस बात से हैरान था कि उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में जहां कहीं भी चौधरी चरण सिंह ने जनसभा को संबोधित किया कहीं भी जातिवादी आधार पर वोट मांगने की कोशिश नहीं की।[24]

चौधरी चरण सिंह सिद्धांततः एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति थे ,आर्यसमाजी होते हुए भी कभी उन्होंने हिन्दुत्व की भावना को प्रोत्साहित करने वाले विचार प्रस्तुत नहीं किए। जब वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने प्रदेश के मुस्लिम बाहुल्य 23 जिलों में सरकारी गज़ट उर्दू में उपलब्ध कराने की व्यवस्था की तथा केन्द्र में ग्रहमंत्रित्व के दौरान अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की।[25] 1984 के सिक्ख दंगों की

Vol. 03, Issue 03, December 2021
ISSN (Online) No. 2 5 8 2 – 0 4 6 X
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

उन्होंने कड़ी आलोचना की। चौधरी चरण सिंह के विचार जाति प्रथा एवं सम्प्रदायिकता विरोधी परन्तु प्रगतिशील थे। उन्होंने देश में जन्म दर कम करने पर बल दिया परन्तु इसके लिए उन्होंने सरकारी आतंक के बजाय जन चेतना पर बल दिया।[26] भाषा के मामले पर उनका विचार था कि एक देश एक भाषा का सिद्धांत लागू करने से ही देश मजबूत हो सकता है।[27]

भ्रष्टाचार पर उनके विचार

चौधरी चरण सिंह एक ईमानदार नेता थे यही उनकी छवि भी थी। इसीलिए उन्होंने भ्रष्टाचार के विरुद्ध समय समय पर अपनी आवाज मुखर की तथा कांग्रेस के लम्बे समय तक शासन में बने रहने को भ्रष्टाचार के लिए उत्तरदायी माना। नेहरू जी के सम्बंध में भी उन्होंने कहा कि जिस व्यक्ति ने भारत में संसदीय लोकतंत्र की जड़े जमाने मे इतना परिश्रम किया उसी की गलतियों से भारत में भ्रष्टाचार की जड़े इस तरह से फैली कि संसदीय लोकतंत्र ही खतरे में पड़ गया। उनका मानना था कि आज़ाद भारत में भ्रष्टाचार मूलरूप से चुनावी राजनीति और उद्योपतियों के मध्य गठबंधन से आरम्भ हुआ क्योंकि चुनावी चन्दा राजनीतिज्ञों तथा व्यापारियों के मध्य मधुर सम्बन्ध बनाए रखता है जिसके फलस्वरूप व्यापारी अपने दिये गए दान को सत्ता के माध्यम से कई गुना अधिक रूप से वसूल कर लेना चाहता है और यही बुराई तब तक फैलती है जब तक यह सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित नहीं कर लेती। राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए नेताओं को चुनाव हेतु बड़ी धनराशि की आवश्यकता होती है और जो व्यापारी जितना बड़ा चंदा देता है वही अप्रत्यक्ष रूप से सत्ता के उतने ही निकट आ जाता है। व्यापारियों द्वारा उत्पन्न काले धन को सुरक्षित रखने के लिए भी भृष्ट नेताओं, अफसरों और व्यापारियों के बीच एक गहरी साझेदारी उत्पन्न होती है जिससे देश की नैतिक और वित्तीय दोनों ही संस्थाओं को आघात पहुँचता है।

चौधरी चरण सिंह का कहना है कि भ्रष्टाचार का एक और तरीका यह भी है कि सामान्य नियमों को जानबूझकर लागू न करना। जो उद्योगपति अथवा व्यापारी राजनीतिक दलों को चन्दा देते हैं उनका उद्देश्य आयकर न देना और अन्य कानूनों से बच निकलना होता है तथा नौकरशाही भी मन्त्रियों के समर्थन के कारण ऐसी अवहेलनाओं के प्रति आँख बंद कर लेती हैं। इन सुविधाओं और

अफ़सरशाही की इस प्रणाली ने निर्बल और जर्जर प्रशासन को पूर्णतः जकड़ लिया है, फलस्वरूप साधारण जनता का प्रशासन से विश्वास कमतर होता जाता है तथा इसी कारण राजनेताओं के भृष्टाचार उन्मूलन के भाषणों का जनता पर प्रभाव समाप्त होता जाता है।[28]

राजनीतिक भ्र्ष्टाचार को निर्मूल करने के लिए उन्होंने लोकपाल विधेयक को पास कराने का बहुत प्रयास किया तथा उनके प्रधानमंत्रित्व काल मे यह बिल तैयार व प्रस्तुत किया गया किंतु बिल को कानूनी जामा पहनाने से पहले ही संसद भंग हो गई और उनकी यह इच्छा अधूरी ही रह गई। इस बिल को पास कराने के ऐसे प्रयास फिर कभी नहीं हुए जैसे चरण सिंह द्वारा किए गए।[29]

चौधरी चरण सिंह ने स्वयं को आर्य समाज के एक कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' को अपने जीवन का एक अंग बना लिया तथा वे हमेशा सच्चाई एवं ईमानदारी के मार्ग पर चलते रहे तथा उन्होंने कृषकों से भी सच्चाई एवं ईमानदारी की ही अपेक्षा की। जाति प्रथा का उन्होंने कट्टर विरोध किया तथा कहा कि सरकारी नौकरियों में चयनित सभी राजपत्रित अधिकारियों को अंतर्जातीय विवाह करना यदि अनिवार्य कर दिया जाए तो इससे जाति प्रथा पर अंकुश लगाने में सहायता मिलेगी। वे सर्वधर्म समभाव के पक्षधर थे तथा जाति प्रथा को भारत की दासता का एक कारण मानते थे तथा कहते थे कि इन जातिवादी तत्वों ने हमारे समाज को सर्वाधिक क्षति पहुंचाई है। उन्होंने उत्तर प्रदेश में शिक्षण संस्थानों के नाम के आगे से जातिसूचक शब्द हटाने का काम बखूबी किया। उन्होंने बी पी मण्डल के नेतृत्व में पिछड़ी जाति आयोग का गठन कराया परन्तु अपनी जाति को इसमें शामिल करने का कोई प्रयास नहीं किया ।

संदर्भ सूची

---

[1] सिंह, अजय (सम्पा.): चौ. चरण सिंह विशिष्ट रचनाएँ, किसान ट्रस्ट, नई दिल्ली-1993, पृष्ठ-1
[2] वही, भूमिका से उदधृत।
[3] हन्स, कोहन: ए हिस्ट्री ऑफ नेशनलिज्म इन दी ईस्ट, न्यूयॉर्क-1929, पृष्ठ-63
[4] सिंह, प्रो. कैलाशनाथ: परंतप, पृष्ठ 86-87
[5] चौधरी चरण सिंह के सुपुत्र अजीत सिंह के साक्षात्कार से उदधृत।
[6] ठाकुर, जनार्दन: ऑल दि जनता मैन, विकास पब्लि. हाउस, दिल्ली-1978, पृष्ठ-67
[7] सिंह, चौ. चरण सिंह: इकोनॉमिक नाईटमेयर ऑफ इंडिया- इट्स कॉज़ेज़ एंड क्योर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली-1984, पृष्ठ-539

[8] शर्मा, डॉ.शंकरदयाल: असली भारत-1990, पृष्ठ-29

[9] उत्तर प्रदेश विधानसभा की कार्यवाही, खण्ड-283, पृष्ठ-957

[10] वही, पृष्ठ-537

[11] असली भारत के पूर्व सम्पादक भोलाशंकर शर्मा के साक्षात्कार से उदधृत

[12] त्रिवेदी, शिखा: इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया, जून-1987, पृष्ठ-23

[13] सिंह, चौ. चरण: हू इज़ ए कास्टिस्ट, किसान ट्रस्ट नई दिल्ली ,पृष्ठ 58

[14] राजनारायण: न दायें न बायें ,पृष्ठ 11-13

[15] वही पृष्ठ 11-13

[16] रावत, ज्ञानेन्द्र: चौ.चरण सिंह स्मृति और मूल्यांकन, किसान ट्रस्ट नई दिल्ली- 1995,पृष्ठ 12-13

[17] रघु ठाकुर असली भारत-1990,पृष्ठ-75

[18] सिंह, चौ. चरण: इकॉनॉमिक नाईटमेयर ऑफ इंडिया- इट्स कॉज़ेज़ एंड क्योर, ऑप सिट. पृष्ठ-539

[19] वही, पृष्ठ-539

[20] वही, पृष्ठ-539

[21] वही, पृष्ठ-540

[22] वही, पृष्ठ-544

[23] चौधरी अजीत सिंह के साक्षात्कार से उदधृत

[24] खन्ना, जस्टिस एच. आर., असली भारत-1990, पृष्ठ-13

[25] सिंह, अजय: चौधरी चरण सिंह विशिष्ट रचनाएं, किसान ट्रस्ट नई दिल्ली से प्रकाशित की प्रस्तावना से उदधृत

[26] रावत, ज्ञानेन्द्र (सम्पा.): चौ. चरण सिंह स्मृति और मूल्यांकन, ऑप.सिट. पृष्ठ-15

[27] वही,पृष्ठ-15

[28] राणा, के.एस.: चौ. चरण सिंह व्यक्तित्व एवं विचारधारा,नीरज प्रकाशन मेरठ-1984, पृष्ठ 128-129

[29] खन्ना, जस्टिस एच. आर.: असली भारत-1990 पृष्ठ-13